माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

[illegible]100124

अंकों में — परीक्षार्थी का रोल नम्बर

-	1	8	4	5	3	0	2	4	0

शब्दों में

-	एक	आठ	चार	पाँच	तीन	शून्य	दो	चार	शून्य

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 01 शब्दों में एक

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 03

ग :– परीक्षा का दिनांक 27 03 18

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा — केन्द्र नं. 451[illegible] हाईस्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर — [signature] Birendra Patil

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर — [signature]

2018

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा — [signature] C.P.UIKEY 74015

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा — Manju Chourasia V.No. 74023

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

[illegible] शब्दों में — कुल प्राप्तांक अंकों में

(2)

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 2 के अंक	कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 1

i) (द) प्रेममार्गी ।

ii) (ख) पद्माकर ।

iii) (स) आस्तिक ।

iv) (द) व्यंग्य निबन्ध ।

v) (स) अज्ञेय ।

E

उत्तर क्रमांक - 2

i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

ii) कुण्डलियाँ ।

iii) बिहारी ।

iv) मुंशी प्रेमचंद ।

v) गौण ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 3

i) सत्य ।

ii) असत्य ।

iii) सत्य ।

iv) सत्य ।

v) सत्य ।

उत्तर क्रमांक - 4

i) रामचरित मानस - (च) महाकाव्य

ii) गेहूँ और गुलाब - (ङ) रामवृक्ष बेनीपुरी

iii) दोपहर - (ख) द्विगु समास

iv) बेटियाँ पावन दुआएँ हैं - (क) अजहर हाशमी

v) भगिनी निवेदिता - (घ) मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

उत्तर क्रमांक -5

i) 'थके हुए कलाकार से' के कृतिकार का नाम धर्मवीर भारती है।

ii) लोक संस्कृति का जन्म गाँवों में हुआ।

iii) स्थायी भावों के उत्पन्न होने के कारणों को 'विभाव' कहते है।

iv) जब गुण के महत्व को समझने वाला ग्राहक मिलता है तभी गुण लाख रूपयों में बिकता है।

v)

शब्द	संधि विच्छेद
जगन्नाथ	जगत + नाथ

उत्तर क्रमांक - 6

'स्तुति खण्ड' में जायसी ने सात द्वीपों और चौदह भुवनों की चर्चा की है।

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 5 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 7

बच्चे की आँखों की तुलना तितली के पंखों से की गई है।

उत्तर क्रमांक - 8

कवि ने हिमालय की झीलों में हँसों को तैरते हुए देखा है।

उत्तर क्रमांक - 9 (अथवा)

नदियाँ आगे चलकर समुद्र के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

उत्तर क्रमांक - 10

कवि के अनुसार डाँटे की मर्यादा उसकी कठोरता एवं तीखापन है।

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक -11 (अथवा)

कृष्ण ने शिशुपाल का वध करके माहिष्मति की गद्दी पर उसके पुत्र धृष्टकेतु को बिठाया।

उत्तर क्रमांक -12 (अथवा)

पृथ्वी पर मानव अपने साथ भूख और प्यास लेकर आया।

उत्तर क्रमांक -13

लेखक ने संगीत का जन्म श्रम से माना है।

उत्तर क्रमांक -14 (अथवा)

यक्ष के, संसार के सबसे बड़े आश्चर्य संबंधी प्रश्न पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि - हर रोज कितने ही प्राणियों को मृत्यु

के मुख में जाते देखकर भी बचे हुए प्राणी यह सोचते है कि वे अमर रहें यह सबसे महान आश्चर्य की बात है।

उत्तर क्रमांक-15 (अथवा)

i) उपासना करने वाला – उपासक

ii) पूजा करने वाला – पुजारी

उत्तर क्रमांक – 16 (अथवा)

वात्सल्य रस –

"सहृदय के हृदय में स्थित 'वत्सल' नामक स्थायी भाव का जब विभाव अनुभाव व संचारी भाव से संयोग होता है तब वहाँ वात्सल्य रस की निष्पत्ति होती है।"

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक-17

निवेदिता भारतीय स्त्रियों के गुणों से अत्यधिक प्रभावित थी। वे उन्हें शिक्षित व आत्मनिर्भर बनाना चाहती थी। इसलिए उन्होंने अपने निवास के निकट बालिकाओं के लिए विद्यालय खोला। इसमें वे महिलाओं को पढ़ाती व मिट्टी एवं चित्रकारी के काम उन्हें सिखाती थी। इस विद्यालय हेतु वे धन एकत्रित करने इंग्लैण्ड, फ्रांस व अमेरिका भी गई। प्रारंभ में इस विद्यालय में कम बच्चे थे परन्तु धीरे-धीरे ~~वह~~ निवेदिता का भाव बड़ा व विद्यालय विकसित होने लगा। आज वह "रामकृष्ण शारदा मिशन भगिनी निवेदिता बालिका विद्यालय" के रूप में स्त्री शिक्षा का अनुकरणीय कार्य कर रहा है। स्पष्ट है निवेदिता भारतीय स्त्रियों के शिक्षा प्रति जागरूक थी। वे उन्हें सत्यता, पवित्रता एवं अन्य गुणों के साथ शिक्षित भी देखना चाहती थी। पश्चिम का अंधानुकरण उन्हें पसंद नहीं था।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक -18

अन्योक्ति अलंकार - "जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। अर्थात् जहाँ कोई बात प्रत्यक्ष रूप से न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कही जाती है, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।"

उदाहरण -

"माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि।
फूले-फूले चुन लिए, काल्हि हमारी बार ॥"

उत्तर क्रमांक -19

शब्द	संधि विच्छेद	संधि का नाम
i) परमानंद	परम + आनंद	दीर्घ स्वर संधि
ii) निर्गुण	निः + गुण	विसर्ग संधि
iii) जगदीश	जगत् + ~~ईस~~ ईश	व्यंजन संधि

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक -20

प्रगतिवाद की चार विशेषताएँ -

(I) शोषितों के प्रति सहानुभूति।

(II) नारी शोषण के प्रति मुक्ति की आवाज।

(III) भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद की श्रेष्ठता पर बल।

(IV) ईश्वर के प्रति अनास्था।

उत्तर क्रमांक - 21

जीवनी -

"जीवनी से तात्पर्य किसी व्यक्ति के जीवन ~~वृ~~ के लिखित वृत्तान्त से होता है जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा ~~लिखि~~ लिखी जाती है। जीवनी का लेखक अपने नायक के चरित्र को उभारने का प्रयास करता है।"

जीवनी लेखक	उनकी जीवनी
(I) अमृत राय बेगड़	कलम का सिपाही
(II) नाभादास	भक्तमाल

मध्यप्रदेश
EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHY

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - २२ (अथवा)

साहित्यिक परिचय - सुभद्रा कुमारी चौहान

i) दो रचनाएँ -

मुकुल, बिखरे मोती।

ii) काव्यगत विशेषताएँ :-

(i) भावपक्ष -

इनकी कविताओं में वीर रस एवं देश-भक्ति का निरूपण हुआ है। इनकी कविता में उत्साह एवं ओज प्रकट होता है। इनकी कविता में देशप्रेम, राष्ट्रीयता एवं बलिदान की भावना प्रकट होती है। इनकी कविताओं में मुक्त अनुभूतियों का सहजता से प्रयोग हुआ है। नारी सुलभ मातृभाव की अभिव्यक्ति हुई है।

कलापक्ष -

सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सरल सरस खड़ीबोली है। गीतों व लोकगीतों की गायन-शैली में अपने ~~ना~~ भावों को स्वर देने में ये सफल हुई है। इनकी शैली ओजपूर्ण व सुकुमार है। गीतों और लोकगीतों को गायन शैली में प्रस्तुत किया है। इनकी इनकी कविताओं में अलंकारों एवं प्रतीकों का अभाव है।

iii) साहित्य में स्थान :-

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने काव्य में जिस वीर नारी को प्रस्तुत किया है वह

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श है। देश में स्वाभिमान एवं राष्ट्रीयता की भावना जगाने वाली कवियों में इनका स्थान प्रमुख है।

उत्तर क्रमांक - 23

(क) साहित्यिक परिचय - डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

i) दो रचनाएँ :- मातृभूमि, पृथ्वीपुत्र।

ii) भाषा-शैली :- अग्रवाल जी की भाषा शुद्ध परिमार्जित संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। इनकी भाषा में कहीं-कहीं दुरूहता आ गई है। इनकी भाषा में सरल, सुबोध सहज प्रवाह है। इनकी भाषा में देशज शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इनकी शैली में पाण्डित्य, बौद्धिकता, एवं भावात्मकता दिखाई देती है। इन्होंने निम्न शैलियों का प्रयोग अपने निबंधों में किया है -
(I) विचारात्मक शैली, (II) गवेषणात्मक शैली, (III) उद्धरण शैली, (IV) सूत्रात्मक शैली व (V) भावात्मक शैली आदि।

iii) साहित्य में स्थान :- अग्रवाल जी का युग के श्रेष्ठ निबंधकार के रूप में विशिष्ट स्थान है। अग्रवाल जी के विचारात्मक निबंधों का हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ स्थान है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 24 (अथवा)

बैर फूट ही - - - - - - - - - मोह के फाँस।

I) संदर्भ :-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'नीतिधारा' पाठ के 'नीति-अष्टक' शीर्षक से अवतरित है। इसके रचयिता- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र है।

II) प्रसंग :-

यहाँ पर बैर-फूट आदि से सम्पूर्ण राष्ट्रीय एकता के प्रति सजग किया गया है।

III) व्याख्या :-

कविवर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कहते है कि 'सोने की चिड़िया' कहे जाने वाले भारत का नाश स्वार्थ प्रेरित शत्रुता तथा आपसी बैर व फूट से हुआ है। यह बात जानते हुए भी भारतीय आपसी बैर-फूट के मोह बंधन में नहीं त्याग रहें है।

IV) विशेष :-

i) भाषा - ब्रज

ii) बैर-फूट छोड़ने व राष्ट्रीय एकता के प्रति सजग किया है।

iii) दोहा - छंद।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक -25 (अथवा)

आधुनिकता सम्प्रदाय ------ गतिशील कदम है।

I) संदर्भ :-

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'परम्परा बनाम आधुनिकता' पाठ से अवतरित है। इसके लेखक डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

B

II) प्रसंग :-

S

यहाँ पर परम्परा और आधुनिकता के परस्पर सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है।

E

III) व्याख्या :-

आधुनिकता एक गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए वह सम्प्रदाय का विरोध करती है, किन्तु सम्प्रदाय जिस स्थिति में होता है उसकी रक्षा करता है। परम्परा से आधुनिकता का सम्प्रदाय जैसा विरोध नहीं होता है। ये दोनों ही गतिशील प्रक्रियाएँ है। इनके मध्य भेद मात्र यह है कि परम्परा मार्ग में पड़ा अन्तिम चरण है व आधुनिकता आगे व आगे बढ़ता हुआ गतिशील विकसित कदम है।

IV) विशेष :-

(I) सरल व्यावहारिक खड़ी बोली में विषय का प्रतिपादन किया है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

II) विवेचनात्मक शैली
III) यह बताया है कि- परम्परा मार्ग में पड़ा अंतिम चरण व आधुनिकता आगे बढ़ा गतिशील कदम है।

उत्तर क्रमांक -26

कई लोग समझते - - - - - - सपूत कहला सकें।

उत्तर:
i) शीर्षक - "अनुशासन और विद्यार्थी जीवन"

ii) सारांश -
प्रत्येक मनुष्य के लिए अनुशासन क अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुशासन से स्वतंत्रता की रक्षा होती है। इसके द्वारा स्वयं की एवं दूसरों की भी रक्षा होती है। विद्यार्थियों के लिए अनुशासन अमृत - तुल्य है। वे आशा के पुंज है। उन्हें अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए जिससे कि वे भारत के सफल भविष्य का निर्माण कर सकें।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 27 (अथवा)

स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्राचार्य महोदय,
शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
कानापीपल मध्यप्रदेश

विषय - स्थानान्तरण प्रमाणपत्र देने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

सविनय विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दशमी 'स' का एक नियमित छात्र हूँ। मेरे पिताजी का स्थानान्तरण यहाँ से इन्दौर के लिए हो गया है। इस स्थिति में, मैं अपना अध्ययन आपके विद्यालय में जारी रखने में असमर्थ हूँ।

अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि मुझे स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र देने की कृपा करें।

दिनांक - 27 - 03 - 2018

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नाम - हर्षवर्धन परमार
कक्षा - दशमी 'स'

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 17 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक - 24

निबंध

अ) i) विज्ञान की देन

रूपरेखा :-

(I) प्रस्तावना
(II) विज्ञान की देन
(III) विज्ञान अभिशाप के रूप मे
(IV) उपसंहार ।

"आज का युग विज्ञान का युग है, तथा विज्ञान के बिना मानव के अस्तित्व की कल्पना करना व्यर्थ है।"

— एमसन

दूर तारों से किया सम्पर्क हमने ।
पर पड़ोसियों से न हम हँस - बोल पाए ।।
सरल जीवन से रहा न नाता ।
दुश्वारियों को मोल लेकर हम ले आए ।।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

I) प्रस्तावना :-

आज का युग विज्ञान का युग है। आज विज्ञान ने अपनी विजय पताका चतुर्दिक फहरा दी है। प्राचीन समय व वर्तमान समय में पूर्णत: विपरितता आ गयी है। उसमें नवीनता का समावेश हो चुका है। यह सब परिवर्तन विज्ञान के कारण ही हुआ है। आज यदि हमारे पूर्वज अपनी कब्रों से उठकर देखेंगे तो उन्हें विश्वास नहीं होगा कि हम इस दुनिया में रह रहे है। वस्तुत: विज्ञान ने मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है।

घर घर में फैला विज्ञान का प्रकाश
करता दोनों काम नवनिर्माण और विनाश

II) विज्ञान की देन :-

आज विश्व विज्ञान ने मानव को सुख समृद्धि व वैभव प्रदान किए है। विज्ञान ने कई क्षेत्रों में आशातीत उन्नति की है। विज्ञान आज हमें एक वरदान के रूप में प्राप्त हुआ है। विज्ञान की देन निम्न है-

i) चिकित्सा के क्षेत्र में -

आज विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में एक वरदान सिद्ध हुआ है। एक्स-रे किरणों द्वारा शरीर का आन्तरिक फ़ोटो लेकर बीमारियों का पता लगाया जा सकता है। टी. बी. की बीमारियों को तो अतीत की

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

आत बना दिया है। कैंसर, लेप्रोसी जैसे रोगों का उपचार आज संभव है। पीलीया के टीके द्वारा उस पर नियंत्रण पा लिया है।

ii) उद्योग एवं विज्ञान :-

विज्ञान तो उद्योगों के लिए एक वरदान है। विज्ञान द्वारा आविष्कृत मशीनों के द्वारा दिन भर का काम एक व्यक्ति कुछ ही घण्टों में कर सकता है। इसने उद्योगों की क्षमता को बढ़ाया व उनकी लागत कम की है।

iii) आवागमन एवं संचार :-

पहले यात्राएँ भय एवं कष्ट का प्रतीक थी परन्तु आज विज्ञान के द्वारा आविष्कृत वाहनों, रेल, बस, हवाई जहाज के द्वारा यात्रा कुछ ही घण्टों में पूर्ण हो जाती है।

संचार के क्षेत्र में विज्ञान ने अभूतपूर्व चमत्कार किया है। टेलीफोन, टीवी, रेडियो, टेलिग्राम, इंटरनेट के माध्यम से कहीं भी कोई सी भी जानकारी प्राप्त हो जाती है।

iv) कृषि के क्षेत्र में :-

कृषि के क्षेत्र में विज्ञान रामबाण सिद्ध हुआ है। रासायनिक खाद से फसलों के उत्पादन में वृद्धि होती है तो वहीं कीटनाशक दवाओं से फसलें कीटों व सड़ने से बचती है। कृषि यंत्रों के द्वारा कृषि आसान हो गई है। हरित क्रांति विज्ञान की ही देन है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

v) अंतरिक्ष के क्षेत्र में :-
वैज्ञानिकों द्वारा मानव हितों की पूर्ति के लिए मशीनीकृत उपग्रहों के माध्यम से अंतरिक्ष की जानकारी प्राप्त होती है। मौसम संबंधी पूर्वानुमान में भी यह उपयोगी है। इनसेट, आई. आर. एस. इसी दिशा में किए गए कार्य है।
इस प्रकार विज्ञान ने हमें सुख सुविधाएँ दी है।

है विष्णु जैसा पालक शंकर जैसा संहारक
पूजा इसकी शुद्ध भाव से करो आज से आराधक ॥

B
S
E

(III) विज्ञान अभिशाप के रूप में :-
हर अच्छाई के पीछे बुराई छिपी है। जहाँ विज्ञान ने मानव को अपरिमित सुख दिए है वहीं कुछ दुख भी दिए है। विज्ञान के लाभों से मानव आलसी हो गया है। विज्ञान ने एसी मशीनो का आविष्कार किया जिससे 100 व्यक्तियों का कार्य एक ही व्यक्ति कर लेता है किन्तु इस प्रकार उसने एक व्यक्ति को रोटी देकर निन्यानवे व्यक्तियों को लात मार दी है अर्थात बेराजगारी बढ़ी है।
हाइड्रोजन जैसे बम व जहरीली गैस मनुष्य मौत की नींद सुलाने बेचैन है। इसके दुष्परिणामों की व्याख्या हीरोशिमा व नागासाकी के खण्डहर कर रहे है। विज्ञान से प्रदूषण भी बढ़ा है। आज उद्योग, वाहन जहरीला धुआँ व शोर उत्पन्न कर रहे है, जो कि विज्ञान के कारण ही है।

क्र.प.

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

उपसंहार :-
IV)
यह बात ध्यान देने योग्य है कि विज्ञान स्वयं में शक्ति नहीं है वह मनुष्य के हाथों में आकर शक्ति बना है। ईश्वर मनुष्य को ऐसी बुद्धि दे जिससे वह इसका सदुपयोग करे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

"विध्वंस की सोचे नहीं निर्माण की गति और है
विज्ञान के उपादों से सुख स्वयं ले औरो को दें।।

"सुबह से शाम तक शाम से सुबह तक हम विज्ञान ने हमारे जीवन को सुखद बनाया है।"
- पं. नेहरू।

(ब) रूपरेखा-

(i) वृक्षारोपण

रूपरेखा =>

(I) प्रस्तावना
(II) भारतीय संस्कृति एवं वन
(III) वृक्षारोपण की आवश
(IV) वनो से लाभ
(V) वृक्षारोपण का महत्व
(VI) वन महोत्सव
(VII) उपसंहार।